[Mahor *, Vol.7 (Iss.11SE): November 2019]
चित्रकला और उसके अंतः अनुशासनिक सम्बन्ध
Painting and Its Interdisciplinary Relation
ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.984

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में चित्रकला उल्लेख

निशा माहौर [1]

[1] शोधार्थिनी (जे.आर.एफ.) चित्रकला विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़।

शोध सारांश

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में चित्रकला से सम्बन्धित नियमों का उल्लेख विस्तृत रूप से मिलता है जिसमें काव्य, नाटक, महाकाव्य, पुराण, उपनिषद् व विभिन्न विषयों के ग्रन्थों द्वारा भारतीय चित्र लेखन की प्राचीन परम्परा व सांस्कृतिक विधियों एवं जनमानस में उनकी लोकप्रियता का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे ग्रन्थ भी हैं, जिनमें स्वतन्त्र व व्यापक रूप से चित्रकला की व्याख्या विस्तार रूप से की गयी है। उदाहरण स्वरूप विष्णुधर्मोत्तर पुराण मार्कण्डेय द्वारा रचित इस ग्रन्थ में 269 अध्याय हैं। जिसके अन्तर्गत तीसरे खण्ड में संस्कृत विषयों में विशेषकर ललित कलाओं के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। जिसमें अध्याय 1 से लेकर 118 तक कला के बारे में बताया गया है। इसी ग्रन्थ में 35 से 43 तक नौ अध्याय चित्रसूत्र के हैं। यह बहुत चर्चित व सर्वाधिक उल्लेखनीय एवं बहुचर्चित हैं। जिसमें चित्रकला से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी दी गयी है, जो इससे पहले अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं मिलती।

इसी तरह से महाकाव्य, रामायण, महाभारत में चित्रशालाओं, महलों, रथों पर चित्रकारी का वर्णन मिलता है व महान नाटकार भाष ने अपने तीन नाटकों स्वप्नवास वदत्तम्, प्रतिज्ञा योगंधरायण तथा दूतवाक्य में चित्रों के बारे में बताया है। इसके अलावा अभिलषितार्थ चिन्तामणि, मानसार, समंरांगण सूत्रधार जैसे ग्रन्थों में भी चित्रकला का उल्लेख किया गया है।

इन प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के माध्यम से ही आज चित्रकार कलाकृतियों का अध्ययन सूक्ष्मरूप से करने में सक्षम हो सका है। अर्थात् इन ग्रन्थों में चित्र से सम्बन्धित नियमों का पालन अजन्ता, मुगल, राजस्थान के लघु चित्रों में देखा जा सकता है। इन नियमों का पालन करते हुये ही चित्रकार अपनी कलाकृतियों में सामंजस्य, सन्तुलन व सहयोग, प्रभाविता जैसे भावों को आत्मसात करते हुये अपनी कलाकृति को अभिव्यक्त कर पाने में समर्थ हो सके हैं। जिसका उदाहरण बंगाल स्कूल व कलकत्ता के कलाकारों द्वारा बनायी कलाकृतियों में देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द – चित्र, ग्रन्थ, महाकव्य, नाटक।

Cite This Article: निशा माहौर. (2019). "प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में चित्रकला उल्लेख." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 252-256. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592634.

चित्रकला के विषयों का विस्तार जीवन के विस्तार के समान ही है, जितना जीवन उतने ही चित्रों के विषय। जो हमें प्राचीन ग्रन्थों में देखने को मिलते हैं जैसे विष्णुधर्मोत्तर पुराण छठी शती में मार्कण्डेय मुनि द्वारा रचित इस ग्रन्थ में 269 अध्याय हैं। इस ग्रन्थ के तीसरे खण्ड में सांस्कृतिक विषयों, विशेषकर ललित कलाओं का

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592634

वर्णन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसी के तीसरे खण्ड में 335 अध्याय हैं जिनमें 1 से 118 अध्याय तक कला विषय की बात कही गयी है।[1]

इसी ग्रन्थ के 35 से 43 तक नौ अध्याय चित्रसूत्र के हैं। यह ग्रन्थ चित्रकला की विस्तृत जानकारी के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण व बहुचर्चित ग्रन्थ है। कला की जितनी जानकारी इस ग्रन्थ में मिलती है, अन्य किसी में नहीं है। चित्रसूत्र में वर्णित नौ अध्यायों में (1) आयाममान वर्णन, (2) प्रमाण वर्णन, (3) सामान्यमान वर्णन, (4) प्रतिमालक्षण, (5) श्रयवृद्धि, (6) रंग व्यतिकर, (7) वर्तना, (8) रूप-निर्माण, (9) श्रृंगारभावादि। इन सभी नियमों का प्रयोग अजन्ता के चित्रों में देखने को मिलता है।[2]

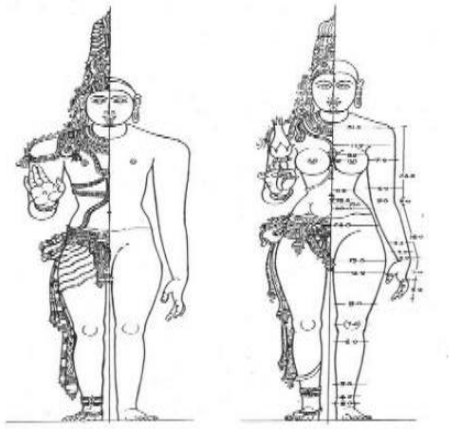

चित्रसूत्र से सम्बन्धित कथा के बारे में बताते हुये मार्कण्डेय मुनि राजावज्र को बताया कि नारायण मुनि ने लोगों की हितकामना के लिये ही चित्रसूत्र का निरूपण किया था। उन्होंने कहा कि निकट आयी सुर-सुन्दरियों को भ्रमित करने के लिये मुनि ने अतिसुन्दर स्त्री का उत्तम चित्र बनाया। चित्र में स्त्री लावण्यमयी अपसरा लग रही थी। जिसे देखकर सभी देव-स्त्रियाँ लज्जित हो गयीं। इस प्रकार महामुनि ने चित्र लक्षणों से युक्त-चित्र को अच्युत विश्वकर्मा को सौंप दिया। यहीं से चित्रसूत्र का श्री गणेश हुआ।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592634

चित्रसूत्र में चित्रकला सभी कलाओं में सर्वश्रेष्ठ है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाली है, जिस घर में इसकी प्रतिष्ठा की जाती है, वहाँ पहले ही मंगल होता है- कलानां प्रवंर चित्रं धर्मकामार्थमोक्षदम्। / मङ्ल्यं प्रथमं चैतद्ग्रहेयत्र प्रतिष्ठितम्॥[3] अर्थात् - जैसे पर्वतों में सुमेरु श्रेष्ठ है, पक्षियों में गरुड़ प्रधान है, और मनुष्यों में राजा उत्तम है, उसी प्रकार कलाओं में चित्रकला उत्कृष्ट है। चित्रकला का समस्त रहस्य खोलते हुये चित्र-सूत्रकार कहते हैं कि अच्छे चित्र वही हैं, जिनमें माधुर्य, ओज, सजीवता व जीवित प्राणियों की भाँति चेतनावान व सुशोभित हो।

इसी तरह से महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य मेघदूत व रघुवंश में चित्रकला के बारे में बताते हुये लिखा कि मेघदूत में विरही यक्ष अपनी रूठी हुई नायिका का चित्र गेरु से सुमेरगिरि पर बनाते हुये कहता है कि मैं पत्थर की शिला पर तुम्हारी रूठी हुई मूर्ति का चित्र बनाकर यह बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि तुम्हें मनाने के लिये मैं तुम्हारे चरणों पर पड़ा हूँ उसकी आँखों में आँसू इतने उमड़े हुये कि चित्र में भी आँखों में आँसू भर जाने के कारण वह उसे देख नहीं पा रहा है।

कालिदास के नाटक मालविक्राग्निमित्र, विक्रमोवशीम, अभिज्ञान शाकुन्तलम् में भी चित्रों का उल्लेख मिलता है। जिसमें विक्रमोवशीर्य में विमानों पर इन्द्रधनुषी सतरंगें चित्र अंकित होने का वर्णन है।

मालविकाग्निमित्रम् में लेखाचार्य द्वारा गीले रंगों से चित्र बनाने का उल्लेख है। अभिज्ञान शाकुंतलम् में राजा दुष्यन्त को शकुंतलता का चित्र बनाते हुये वर्णन किया है। राजशेखर के विद्धशालभंजिका नाटकों में समकालीन सामाजिक जीवन के दृश्यों का भी चित्रण मिलता है। विद्धशालभंजिका में एक उल्लेख के अनुसार रानी का नवयुवा भतीजा कभी-कभी महिलाओं के वस्त्र पहन कर नवयुवती जैसा बन जाता है जिसे देखकर चित्रकारों ने उसे लड़की समझकर दीवार पर उसका चित्र बना दिया।चित्र इतना सजीव व यर्थाथ था कि राजा भी भ्रमवश उसे लड़की समझ बैठे।

नाट्यशास्त्र - छठी शताब्दी ई0पू0 भरतमुनि द्वारा लिखित नाट्यशास्त्र में सभी भावों, रसों व मुद्राओं का वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है। साथ ही रंगमंच की दीवारों पर चित्र बनाने के बारे में भी बताया गया है कि नाटककार के लिये रंगों के उचित ज्ञान व महत्व के बारे में बताते हुये रंगों का वर्णन सूक्ष्म रूप से किया गया

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592634

है कि किस अवसर पर किन-किन रंगों का उपयोग करें व देवताओं एवं पात्रों को किन रंगों से रंगा जाये। इन सभी बातों का उल्लेख नाट्यशास्त्र में मिलता है।

समंरामंणसूत्रधार - 11वीं शती में परमार नरेश-भोज द्वारा रचित इस शिल्प ग्रन्थ में भूमिबन्ध, चित्रोद्देश्य, लेप्यकर्मादि, मनोवृत्ति व रस दृष्टिलक्षण एवं इसके छह अध्यायों में चित्रकर्म व मूर्तिकला की चर्चा विस्तारपूर्वक की गयी है।[4]

अभिलषितार्थचिंतामणि - अर्थात् मनानसोल्लास - 12वीं शती में सोमेश्वर तृतीय द्वारा रचित इस ग्रन्थ में चित्र का स्वरूप, चित्रभित्ति, लेखनी लेखन, शुद्धवर्ण, मिश्रवर्ण, चित्रवर्ण, पक्षसूत्र लक्षण, तालिलक्षणा, सामान्य चित्र प्रक्रिया। इसके अतिरिक्त सर्वप्रथम भित्ति की तैयारी रंगों के मिश्रण व वज्रलेप की चर्चा का उल्लेख किया गया है।[5] कामसूत्र (200-300 ई0) - वात्स्यायन द्वारा रचित कामसूत्र के तीसरे अध्याय में 64 कलाओं का वर्णन किया गया है। इसी अध्याय में यशोधर पंडित ने कामसूत्र की टीका जसमंगला नाम से की जिसमें चित्रकला के छः अंग बताये हैं- रूपभेदाः प्रमाणानि, भावः लावण्य, योजनम्। / सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रषडंगकम्॥

रामायण पर आधारित भास के नाटक प्रतिमानाटक तथा भवभूति के उत्तमरामचरित में राम के जीवन पर आधारित नाटक में महलों की दीवारों पर राम के जीवन से सम्बन्धित दृश्यों का अंकन होने का उल्लेख मिलता है। भास के नाटक दूतवाक्यम् में द्रोपदी के चीरहरण के पट-चित्र को दरबार में लाकर खोले जाने का उल्लेख है जिसमें यह अनुमान लगाया जा सकता है कि चित्रों की रचना चित्रपट व फलक पर भी की जाती थी। भास के प्रतिमानाटक में एक व्यक्ति चित्र व मम्मट के काव्यप्रकाश में एक पालतू तोते का वर्णन है, जो एक पराजित राजा के द्वारा छोड़े जाने पर एक सुनसान महल की दीवार पर चित्रित राजकुमारी और उसकी सखियों के चित्रों को भ्रमवश सजीव समझकर उनसे अपने लिये दाना चुग्गने की याचना कर रहा है।[6]

श्री हर्ष ने नैषधीयचरित में दमयंती के जीवन-वृतांत चित्रण का उल्लेख किया है। सातवीं शती के महानकवि बाण ने अपनी कृति हर्षचरित में सम्राट हर्षवर्द्धन की बहन राज्यश्री के विवाह के अवसर पर महल की दीवारों को चित्रों द्वारा सजाये जाने का उल्लेख है। महाभारत (600 ई पूव - 500 ई0 पू0) - इस महाकाव्य में सत्यवान के सम्बन्ध में बताया है कि उसे बचपन से ही घोड़े का शौक था। वन में रहते हुये वह अपने माता-पिता के साथ मिट्टी के घोड़े बनाने के साथ-साथ उसके चित्र भी बनाता था इसीलिये उसका नाम चित्राश्व पड़ गया।[7]

इस काव्य में एक और प्रसंग उषा व अनिरूद्ध का था। जिसमें राजकुमारी ऊषा ने अपने स्वप्न में एक सुन्दर युवक को अपने साथ वाटिका में विहार करते हुये देखा और उससे प्रेम करने लगी। प्रातः जागकर राजकुमारी युवराज की स्मृति में दुःखी होकर एकान्त में चली गयी जब इस घटना के बारे में उसकी परिचायिका चित्रलेखा को पता चला तो उसने समस्त महापुरुषों, देवताओं व उस समय के सभी युवकों के छवि चित्र अपनी स्मृति से बनाये और उन्हें उषा के सम्मुख रख दिया। उषा ने स्वप्न में आये युवक को पहचान लिया जो कृष्ण के प्रपौत्र अनिरुद्ध था। इस प्रकार कथाओं के माध्यम से स्मृति चित्र बनाने का उल्लेख है।

एक प्रसंग में युधिष्ठिर की सभा का रोचक वर्णन है। जिसके अन्तर्गत जहाँ सभा भवन की दीवार में दरवाजा दिखाई देता था वहाँ दरवाजा नहीं था और जहाँ दरवाजा दिखाई नहीं देता था वहाँ दरवाजा था। जिसके कारण दुर्योधन को भ्रम हो गया। इसी भवन में एक जगह दीवार पर ऐसा चित्र बनाया गया है, जिसमें एक

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592634

सच्चा दरवाजा खुला दिखायी पड़ता था लेकिन जब कोई उसमें प्रवेश करता तो उसका सिर दीवार से टकरा जाता था।

उद्देश्य

प्राचीन ग्रन्थों से चित्रकला का परिचय, प्राचीन ग्रन्थों के नियमों से अवगत, प्राचीन ग्रन्थों के नियमों का पालन करते हुये आधुनिक कला में उसका महत्व।

संदर्भ

[1] चंद्रिकेश, जगदीश, पुराणकालीन रूपंकर कलाएँ, पुराण साहित्य में चित्र, मूर्ति और वास्तु का अनुशीलन एवं समसामयिक कला - परम्परा का संदर्भ, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, 2010
[2] द्विवेदी, प्रेमशंकर, चित्रसूत्रम्, कला प्रकाशन वाराणसी ISBN 978-93-80467-50; 2011
[3] वही, पृष्ठ 12
[4] पुराणकालीन रूपंकर कलाएँ, पृष्ठ 125
[5] गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन प्राइवेट लि0, इलाहाबाद, 1963
[6] पुराणकालीन रूपंकर कलाएँ, पृष्ठ 128
[7] प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012, ISBN 978-81-7137-906-4